



बस में मचलती भाभी की चूत की चुदाई का सफ़र-2

“भाभी चुप होकर मजे लेने लगी मैंने एक-एक करके उसके सारे हुक खोल दिए। उसका ब्लाउज पूरा खुल चुका था और मैं उसकी चूचियों को दबाने में जुटा था। उसने अपना एक हाथ मेरे लौड़े पर रख दिया और उसे दबाने लगी। ...”

Story By: Ansh Pandey (ansh099247@gmail.com)

Posted: Monday, December 5th, 2016

Categories: [कोई मिल गया](#)

Online version: [बस में मचलती भाभी की चूत की चुदाई का सफ़र-2](#)

बस में मचलती भाभी की चूत की चुदाई का सफ़र-2

अब तक आपने पढ़ा..

बस में मिली वो अप्सरा मुझसे अपनी चूचियों को स्पर्श करवा रही थी।

अब आगे..

अब मुझसे भी रहा नहीं जा रहा था.. तो मैंने फ़ोन बंद कर दिया और अपने दोनों हाथ फोल्ड करके बैठ गया। बस की लाइट काफी देर पहले ही बुझ चुकी थी तो कुछ खास दिख भी नहीं रहा था। इसी का लाभ उठाते हुए अपनी छोटी वाली उंगली से उसकी चूची छुई.. तो उसने कोई जवाब नहीं दिया।

धीरे-धीरे करके मैं अपने हैण्ड फोल्ड किए हुए ही उसकी चूची को दबाने लगा। मैंने अपनी हथेली से उसकी एक चूची को दबा दिया।

उसकी चूचियां बड़ी तो थीं.. पर इतनी ज्यादा मुलायम होंगी.. इसका अंदाजा मुझे नहीं था।

हथेली से जोर देते ही वो पूरी तरह से दब गई और उसने हल्की सी आवाज निकाली-

आह्ह्हह क्या कर रहे हो ?

मैं- जो करना चाहिए।

उसने कहा- तो आराम से दबाओ न.. दर्द हो रहा है।

मैंने कहा- ओके..

अब झण्डी हरी थी और मैं धीरे-धीरे उसकी चूचियां दबाने लगा, अब वो भी पूरा साथ देने

लगी। उसकी चूचियों को जी भर के दबाने के बाद मैंने अपना हाथ उसकी जांघ पर रख दिया।

मैंने पूछा- आपका नाम क्या है ?

तो कहने लगी- खुशी।

मैंने उसके नाम की भी तारीफ की.. जिससे वो मुझ पर और ज्यादा मेहरबान हो गई।

मैंने खुशी की जांघ को सहलाना जारी रखा।

अब मेरा हाथ उसकी योनि की तरफ बढ़ रहा था.. जिसका उसने कोई विरोध नहीं किया।

मैंने अपना हाथ उसकी योनि पर रख दिया और साड़ी के ऊपर से ही उसकी योनि को सहलाने लगा।

अब खुशी भी गर्म होने लगी थी, उसने अपनी दोनों टांगों को फैला कर मेरे हाथ को ज्यादा जगह दे दी.. जिससे मैं उसकी योनि को सही से सहला सकूँ।

मैं उसकी योनि सहला रहा था और खुशी बहुत धीमी आवाज में मादक सिसकारियां ले रही थी। मैं इसके आगे मैं बढ़ नहीं पा रहा था.. क्योंकि मुझे अन्दर हाथ डालने की जगह नहीं मिल रही थी।

मैं ज्यादा कुछ कर भी नहीं सकता था.. क्योंकि रात होने के बाद भी कोई देख सकता था।

अब खुशी भी कहने लगी- और कुछ न करो.. नहीं तो किसी ने देख लिया तो आफत हो जाएगी।

मैंने अपना हाथ उसकी योनि से हटा कर उसकी चूची पर रख दिया।

मैंने खुशी से कहा- आप अपना पल्लू पीछे से डालिए और उसको आगे लाते हुए अपनी चूची को ढक लीजिए।

तो उसने कहा- ऐसा करने से क्या होगा ?

मैंने कहा- करो तो यार..

उसने कर लिया, अब मुझे थोड़ी आजादी मिली, मैंने भी अपना हाथ उसके पेट के साइड से डालते हुए उसकी चूचियों पर पहुँचा दिया और खुशी की चूची को दबाने लगा ।

अब वो मादक सिसकारियां लेने लगी, मैंने उसके ब्लाउज का हुक खोल दिया ।

वो कहने लगी- रहने दो यार कोई देख लेगा ।

मैंने उससे कहा- कोई नहीं देखेगा, बस आप चुप रहो ।

अब खुशी भी चुप होकर मजे लेने लगी मैंने एक-एक करके उसके सारे हुक खोल दिए ।

उसका ब्लाउज पूरा खुल चुका था और मैं उसकी चूचियों को दबाने में जुटा था । उसकी चूचियों की बात ही कुछ अलग थी.. उन्हें जितना भी दबाओ.. मन नहीं भर रहा था ।

कुछ देर बाद खुशी और गरम हो गई और उसने अपना बायां हाथ अपने पल्लू के अन्दर

डाल कर मेरे हाथ को पकड़ लिया और अपनी चूची को कस-कस कर दबाने लगी और

सिसकारियां लेते हुए अपना एक हाथ मेरे लौड़े पर रख दिया और उसे दबाने लगी ।

वो मुझसे कहने लगी- कुछ करो.. कैसे भी करके मुझे चोद दो ।

यह हिन्दी सेक्स कहानी आप अन्तर्वासना सेक्स स्टोरीज डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

मैंने बोला- यहाँ कैसे करूँगा.. बस भरी हुई है ।

उसने कहा- कोई भी तरीका अपनाओ.. बस मुझे चोदो ।

मैंने कहा- रुको कुछ सोचता हूँ ।

उसने कहा- मेरे पास एक आईडिया है.. जिससे हम दोनों का काम बन सकता है ।

मैंने कहा- बताओ ।

अब खुशी मुझे अपना आईडिया बताने लगी, उसने कहा- दिल्ली में तुम्हें कोई जरूरी काम है या ऐसे ही जा रहे हो ?

मैंने बोला- नहीं कुछ खास जरूरी काम तो नहीं है.. बस जाना है।

खुशी कहने लगी- अगर तुम वहाँ कल पहुँचो.. तो कोई परेशानी तो नहीं होगी।

मैंने कहा- नहीं.. ऐसी कोई दिक्कत नहीं है।

तो कहने लगी- ठीक है तो हम लोग बस से अभी उतर जाते हैं।

मैंने कहा- मैं कुछ समझा नहीं..

तो कहने लगी- पहले बस से उतरो तब समझाती हूँ।

मैंने कुछ देर सोचा.. फिर कहा- ओके..

इतनी देर में मैं ये सोच रहा था की 2-3 घंटे की मुलाकात में क्या किसी पर भरोसा किया जा सकता है, वो भी रात के दो बजे।

मैंने सोचा चलो चलते हैं। वैसे भी मैं सफ़र करते-करते इतना जान गया हूँ कि मुसीबत में कैसे बचाव किया जाता है।

मैंने उससे कहा- आपके साथ जो आदमी है.. उसका क्या ?

तो उसने कहा- वो मेरा चचेरा भाई है। मेरी शादी दिल्ली में हुई है तो मैं अपनी ससुराल जा रही हूँ.. इसका पेपर है। इसलिए ये मेरे साथ जा रहा है। मुझे घर छोड़ कर अपना पेपर देकर ये आ जाएगा।

मैंने कहा- वो तो ठीक है.. पर इसका करना क्या है ?

खुशी कहने लगी- मैं इसको समझा दूंगी कि तुम मेरी सहेली के भाई हो और तुम्हें कुछ काम आ गया है जिस वजह से तुम्हें वापस जाना पड़ेगा और मेरी तबियत खराब हो रही है तो मैं अब सफ़र नहीं कर पाऊँगी। मैं भी घर वापस जाना चाह रही हूँ।

मैंने कहा- आप कहोगी और वो मान जाएगा ?
तो खुशी कहने लगी- वो सब मुझे पर छोड़ दो..

मैंने भी 'ओके' कहा और उसने अपने भाई को आगे बुलाया और उससे मेरा परिचय अपनी सहेली के भाई के रूप में कराया। कुछ औपचारिकता से हम दोनों ने 'हाय-हैलो' किया।

अब उसने उसे बताया कि मेरी तबियत खराब हो रही है और मैं घर वापस जाना चाहती हूँ।
वो कहने लगा- आप घर कैसे जा पाओगी.. कल मेरा दोपहर में पेपर है। अगर अभी वापस चलेंगे तो कल दोपहर में दिल्ली तक कैसे पहुँच पाएंगे ?

तो खुशी ने कहा- तुम परेशान न हो.. मैंने अंश से बात की है.. इन्हें फोन पर कुछ जरूरी काम के लिए बुलाया गया है.. इसलिए ये वापस जा रहा है। मैं इसी के साथ चली जाऊँगी।

खुशी का भाई मुझे देखने लगा।

मैं उस वक्त दुनिया का सबसे शरीफ और जिम्मेदार व्यक्ति बन गया था.. और चुपचाप सुन रहा था।

उसके भाई ने कहा- अरे दीदी कुछ देर में हम पहुँच जाएंगे.. वापस क्यों जाना चाहती हो ?
खुशी बोली- मैं और बीमार पड़ जाऊँगी.. मुझे घर जाना ही है।

वो मुझे घूर रहा था.. जैसे मुझे खा जाएगा।

खुशी के समझाने पर बहुत कोशिशों के बाद वो मान गया और कुछ देर बाद कानपुर आ गया, हम दोनों वहाँ उतर गए।

खुशी के भाई ने कहा- आप मुझे थोड़ी-थोड़ी देर में फ़ोन करती रहना और मैं घर पर भी फ़ोन करे दे रहा हूँ। आपको लेने कोई आ जाएगा।

अब हम लोग बस से उतर चुके थे ।

मैंने खुशी से पूछा- अब क्या करना है ?

तो वो बोली- ऑटो पकड़ो और बस स्टैंड चलो ।

मैंने कहा- जब बस ही पकड़नी ही थी तो हम उतरे क्यों । मुझे लगा था हम किसी होटल या और किसी जगह चलेंगे.. जहाँ हम दोनों साथ टाइम बिता सकें ।

खुशी ने कहा- टाइम ही तो नहीं है न.. सुबह से पहले मुझे घर भी पहुँचना है । भाई ने घर पर फ़ोन कर दिया होगा ।

मैंने बोला- तो उतरने का फायदा क्या हुआ ?

खुशी बोली- जो करना है वो करेंगे बस.. जैसा कह रही हूँ.. वैसा करो ।

फिर हमने ऑटो पकड़ी और बस स्टैंड आ गए ।

मैंने कहा- हम कहीं और भी चल सकते हैं ।

खुशी बोली- तुम मेरी परेशानी नहीं समझ रहे हो.. मुझे सुबह तक घर पहुँचना ही है ।

उसने मेरा हाथ पकड़ा और खींचते हुए लखनऊ की बस में ले गई । मैंने सोचा फालतू का उतर गया.. इससे अच्छा दिल्ली ही चला गया होता ।

खुशी बोली- परेशान न हो अगर किस्मत ने साथ दिया तो सब कुछ हो जाएगा । हम दोनों बस पर चढ़ गए । बस में चढ़ने पर देखा कि बस में 2-4 लोग बैठे थे.. बाकी की बस खाली थी । खुशी मुझसे बोली- हम लास्ट वाली सीट पर बैठते हैं ।

मैंने भी 'ओके' बोला और चल दिया ।

हम दोनों जाकर लास्ट वाली सीट पर बैठ गए ।

अब खुशी कहने लगी- देखो यहाँ पर कोई खास भीड़ नहीं है। मुझे पता था इस समय बस खाली मिलेगी.. तभी मैं यहाँ लाई थी। क्योंकि कानपुर से लखनऊ का सफ़र 3 घंटे का है.. इसलिए रात में कोई ज्यादा लोग सफ़र नहीं करते। यहाँ जो भी हम दोनों चाहते हैं.. मजे से कर भी लेंगे और सुबह तक हम घर भी पहुँच जाएंगे और मुझे घर पर किसी को जवाब भी नहीं पड़ेगा।

मैंने भी 'ओके' कहा और कुछ देर में बस चल पड़ी। कुछ मिनट बाद कंडक्टर आया और हमने 2 टिकट लखनऊ के लिए खरीद लिए।

कंडक्टर बोला- मैडम आगे बैठ जाईए.. सीट खाली हैं।

खुशी ने कहा- मेरे पैरों में बहुत दर्द है मैं पैर सीधे करके बैठना चाहती हूँ। इसलिए यहाँ बैठी हूँ। ये सीट लम्बी है और मैं यहाँ आराम से बैठ जाऊँगी।

इतना सुनकर कंडक्टर ने टिकट दे दिया और चला गया। उसने आगे बैठे 3-4 लोगों को भी टिकट दिया और फिर बैठ गया।

रात काफी होने की वजह से और सीटें खाली होने की वजह से सब लेट गए थे और अब तक बस की लाइट भी बंद हो चुकी थी। मैं खुशी का हाथ पकड़े-पकड़े सहला रहा था।

खुशी ने कहा- अब जो करना है.. जल्दी करो।

मुझे चुदाई का निमंत्रण मिल चुका था। मैंने फिर खुशी से कहा- आप बहुत सुन्दर हो।

खुशी बोली- अच्छा मेरे शरीर का कौन सा भाग सबसे अच्छा है ?

मैंने बोला- किसी एक भाग की तारीफ नहीं की जा सकती.. आप पूरी काम देवी लगती हो।

उसके चेहरे पर गर्व से लबरेज मुस्कान आ गई.. जिससे उसके गाल और लाल हो गए।

अब मैं खुशी के और नजदीक खिसक आया था। इतना पास.. कि उसकी सांस लेने का

अहसास भी मुझे होने लगा था। इस समय वो दुनिया की सबसे हसीन लड़की लग रही थी।
मैं उसके और करीब आता जा रहा था.. उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।

अब चुदाई की बेला आ गई थी।

पूरी चुदाई का एक-एक वाकिया लिखूंगा।

ansh099247@gmail.com

बस आप मेरे साथ www.antarvasnasexstories.com से जुड़े रहिए।

कहानी जारी है।

Other stories you may be interested in

गांव के देसी लंड ने निकाली चूत की गर्मी

मेरी पिछली कहानी थी भाभी के भैया को बना लिया सैया मेरा नाम रेखा है और मैं देखने में काफी सेक्सी लगती हूँ. मैं गांव में रहने वाली देसी लड़की हूँ इसलिए यहाँ पर जगह का नाम नहीं बता सकती. [...]

[Full Story >>>](#)

दोस्त की जुगाड़ भाभी की डबल चुदाई

मेरे प्यारे दोस्तो, कैसे हो आप सब ... मैं आपका दोस्त शिवराज एक बार फिर से एक सच्ची घटना लेकर आया हूँ. आप सबका जो प्यार मुझे मिला, वो ऐसे ही देते रहना. इस बार मैं आपको एक हसीन हादसा, [...]

[Full Story >>>](#)

बड़े चूचों वाली स्टूडेंट की चुदाई

हैलो ! नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम सन्दीप सिंह है. मैं भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले का रहने वाला हूँ। मेरी हाइट करीब 5.7 फीट है। मैं सदैव व्यायाम करता हूँ। जिससे मेरा शरीर बिल्कुल फिट है। [...]

[Full Story >>>](#)

प्यासी भाभी की चूत में लगाई खुशी की चाबी

अन्तर्वासना के सभी यूजर्स को मेरा नमस्कार ! मैं नितीश कुमार मेरठ उत्तर प्रदेश से हूँ और अन्तर्वासना पर हर रोज़ आने वाली कहानियों को पढ़ता रहता हूँ। आज मैं आप सब के बीच अपनी कहानी लेकर आया हूँ। कहानी लिखने [...]

[Full Story >>>](#)

टीचर की यौन वासना की तृप्ति-11

इस सेक्सी स्टोरी में अब तक आपने पढ़ा कि नम्रता मेरे साथ मेरे घर आ चुकी थी और हम दोनों मेरे घर के बेडरूम में चुदाई के पहले का खेल खेलने लगे थे. अब आगे : फिर मैंने उसके पैरों के [...]

[Full Story >>>](#)

